प्रकाशन वर्ष –2010

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् रायपुर छत्तीसगढ़

संरक्षक एवं मार्गदर्शक

सुधीर कुमार अग्रवाल (भा.व.से.)

संचालक राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् रायपुर छत्तीसगढ़

समन्वय

आर.के.वर्मा, सहायक प्राध्यापक एवं डेकेश्वर वर्मा, प्रधानाध्यापक

विषय संयोजक

बी. पी. तिवारी, सहायक प्राध्यापक

डॉ. विद्यावती चन्द्राकर, सहायक प्राध्यापक

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद रायपुर उन सभी लेखकों / प्रकाशकों के प्रति अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करता है जिनकी रचनाएं आलेख इस पुस्तक में समाहित है।

प्रकाशक – छत्तीसगढ़ पाठ्यपुस्तक निगम रायपुर

प्राक्कथन

विद्यालय में अध्ययनरत् बच्चे भविष्य में राष्ट्र के स्वरूप व दिशा निर्धारण करेंगे। शिशुकरण बच्चों को कुम्हार की भॉति गढ़ता है और वांछित स्वरूप प्रदान करता है इस गुरूतर दायित्व के निर्वहन के लिए शिक्षका को बेहतर तरीके से तैयार करना होगा।

''शिक्षा बिना बोझ के'' यशपाल समिति की रिपोर्ट (1993) ने माना है कि शिक्षकों की तैयारी के अपर्याप्त अवसर से स्कूल में अध्ययन–अध्यापन की गुणवत्ता प्रभावित होती है। इन कार्यक्रमों की विषयवस्तु इस प्रकार पुनर्निर्धारित की जानी चाहिए कि स्कूली शिक्षा की बदलती आवश्यकताओं के संदर्भ में उसकी प्रासंगिकता बनी रहें। इन कार्यक्रमों में प्रशिक्षुओं में स्वअधिगम और स्वतंत्र चिंतन की क्षमता के विकास पर जोर होना चाहिए।

कोठारी आयोग (64.66) से ही यह बात की जाने लगी थी कि शिक्षा में गुणात्मक सुधार के लिए शिक्षकों को बतौर पेशेवर तैयार करना अत्यंत जरूरी है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या 2005 ने भी शिक्षकों की बदलती भूमिका को रेखांकित किया है। आज एक शिक्षक के लिए जरूरी है कि वह बच्चों को जाने, समझे, कक्षा में उनके व्यवहार को समझे, उनके सीखने के लिए उपयुक्त माहौल तैयार करें, उनके लिए उपयुक्त सामग्री व गतिविधियों का चुनाव करें, बच्चे की जिज्ञासा को बनाए रखे, उन्हें अभिव्यक्ति का अवसर प्रदान करें व उनके अनुभवों का सम्मान करें।

तात्पर्य यह कि आज की जटिल परिस्थितियों में शिक्षकों की भूमिका कही अधिक उत्तरदायित्वपूर्ण व महत्वपूर्ण हो गई है। इसी परिपेक्ष्य में सेवापूर्व प्रशिक्षण को और कारगर बनाने की आवश्यकता है। शिक्षक शिक्षा में आमूल चूल बदलाव की आवश्यकता बताते हुए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या 2005 में शिक्षकों की भूमिका के संबंध में कहा गया है कि'' वे सीखने–सिखाने की परिस्थितियों में उत्साहवर्धक सहयोगी तथा सीखने को सहज बनाने वाले बने जो अपने विद्यार्थियों को उनकी प्रतिभाओं की खोज में उनकी शारीरिक तथा बौद्धिक क्षमताओं को पूर्णता तक जानने में, उनमें अपेक्षित सामाजिक तथा मानवीय मूल्यों व चरित्र के विकास में तथा जिम्मेदार नागरिकों की भूमिका निभाने में समर्थ बनाएं।

प्रश्न यह है कि शिक्षक को तैयार कैसे किया जाए। बेहतर होगा कि विद्यालय में प्रवेश के पूर्व ही उसकी बेहतर तैयारी हो, उसे विद्यालय के अनुभव दिए जाए। सेवापूर्व प्रशिक्षण के पाठ्यक्रम व विषयवस्तु को फिर से देखने की जरूरत है। इसी परिपेक्ष्य में डी.एड. के पाठ्यक्रम में बदलाव किया गया है।

पाठ्यसामग्री का फोकस शिक्षक विधि से हटकर शिक्षा की समझ, विषयों की समझ, बच्चों के सीखने के तरीके की समझ, समाज व शिक्षा का संबंध जैसे पहुलओं पर केन्द्रित है। पाठयक्रम में शिक्षण के तरीकों पर जोर देने के स्थान पर विषय की समझ को महत्व दिया गया है। नवीन पाठ्यक्रम में शिक्षा के दार्शनिक पहलू को समझने, पाठ्यचर्या के आधारों को पहचानने और बच्चों की पृष्ठभूमि में विविधता व उनके सीखने के तरीकों को समझने की शुरूआत की गई है। द्वितीय वर्ष के पाठ्यकम में इन छः विषयों को सम्मिलित किया गया है –

1. गणित व गणित शिक्षण
2. शिक्षा दर्शन व्यक्ति ,सीखना व शिक्षा
3. भाषा (हिन्दी) व भाषा शिक्षण
4. भाग 1. भाषा (द्वितीय भाषा अंग्रेजी) व भाषा शिक्षण
   भाग 2. भाषा (तृतीय भाषा संस्कृत) व भाषा शिक्षण
5. पर्यावरण अध्ययन व उनका शिक्षण
6. आधुनिक विश्व के संदर्भ में भारतीय शिक्षा

चयनित पाठ्यसामग्री में कुछ लेखक/प्रकाशकों की पाठ्य सामग्री प्रशिक्षार्थियों के हित को ध्यान में रखकर ज्यों की त्यों ली गई है कहीं कही स्वरूप में परिवर्तन भी किया गया है कुछ सामग्री अंग्रेजी की पुस्तकों से लेकर अनुदित की गई है। हमारा प्रयास यह है कि प्रबुद्ध लेखकों की लेखनी का लाभ हमारे भावी शिक्षकों को मिल सके। इग्नू और एन.सी.ई. आर.टी. सहित जिन भी लेखकों/प्रकाशकों की पाठ्यसामग्री किसी भी रूप में उपयोग की गई है, हम उनके हृदय से आभारी है। हम विद्या भवन सोसाईटी उदयपुर,दिगंतर जयपुर,एकलव्य भोपाल,अजीम प्रेमजी फाउण्डेशन बेंगलोर, आई.सी.आई.सी.आई.फाउण्डेशन पुणे, आई.आई. टी कानपुर, छ.ग.शिक्षा संदर्भ केन्द्र रायपुर के अभारी हैं जिनकी टीम ने एस.सी.ई.आर.टी.और डाइट के संकाय सदस्यों के साथ मिलकर पठन–सामग्री को वर्तमान स्परूप प्रदान किया।

अंत में पाठ्यसामग्री तैयार करने में प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से सहयोगी बंधुओं का हम पुनः आभार व्यक्त करते है। पाठ्यकम तैयार करने व पाठ्य सामग्री के संकलन व लेखन कार्य से जुड़े लेखन समूह सदस्यों को भी हम धन्यवाद देना चाहेंगे जिनके परिश्रम से पाठ्यपुस्तक को यह स्वरूप दिया जा सका। पुस्तक के संबंध में शिक्षक प्रशिक्षकों, प्रशिक्षार्थियों के साथ साथ अन्य प्रबुद्धजनों, शिक्षाविदों के भी सुझावों व आलोचनाओं की हमें अधीरता से प्रतीक्षा रहेगी जिससे भविष्य में इसे और बेहतर स्वरूप दिया जा सके।

धन्यवाद !

सुधीर कुमार अग्रवाल
(भा.व.से.)

संचालक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण
परिषद रायपुर, छत्तीसगढ़

—: अनुक्रमणिका :—

इकाई	क्र. विवरण	पृष्ठ संख्या
इकाई–1 संस्कृत भाषा शिक्षण		**1 – 6**
	1. संस्कृत भाषा शिक्षण की आवश्यकताएँ	
	2. संस्कृत भाषा शिक्षण के उद्देश्य	
	3. संस्कृत भाषा शिक्षण के विशिष्ट उद्देश्य	
	4. कौशलपरक दक्षताएँ	
	5. संस्कृत भाषा शिक्षण की प्रविधियाँ	
	6. संस्कृत भाषा की उपादेयता	
इकाई–2 आधार पाठ्यपुस्तक मनोरमा (संस्कृत कक्षा–8)		**7 – 53**
	1. मङ्.गलाचरणम्	
	2. छत्तीसगढस्य लोकगीतानि	
	3. अनुशासनम्	
	4. सुभाषितानि	
	5. डॉ.सर्वपल्ली राधाकृष्णन्	
	6. प्राच्यनगरी सिरपुरम्	
	7. गीतागङ्.गोदकम्	
	8. ग्राम्यजीवनम्	
	9. षड्ऋतुवर्णनम्	
	10. राष्ट्रियः सञ्चयः	
	11. चतुरः वानरः	
	12. महर्षिः दधीचिः	
	13. रामगिरिः (रामगढम्)	
	14. नीतिनवनीतानि	
	15. प्रकृतिर्वेदना	
	16. मित्रं प्रति पत्रम्	
	17. अन्तरिक्ष–ज्ञानम्	
	18. महाकविः कालिदासः	
	19. सूक्तयः	
इकाई–3 व्याकरणिक विधाएँ		**54 – 78**
	1. उच्चारण	
	2. संधि	
	3. समास	
	4. कारक	

5. क्रिया
6. पुरुष
7. काल
8. वचन
9. लिंX
10. वाच्य
11. अव्यय
12. उपसर्ग
13. कृदन्त

इकाई–4 खण्ड (अ) काव्यतत्व **79 – 93**

छंद, अलंकार, रस, पर्यायवाची शब्द, विलोम शब्द, लोकोक्ति व मुहावरे।

खण्ड (ब) मूल्यांकन **94 – 100**

1. मूल्यांकन का अभिप्राय
2. वर्तमान संस्कृत मूल्यांकन प्रणाली
3. हिन्दी से संस्कृत में अनुवाद, संस्कृत से हिन्दी में अनुवाद, संस्कृत के लिए महत्वपूर्ण क्रियाएँ
4. सत्रगत कार्य

इकाई–5 संस्कृत की पाठयोजनाएँ (हरबर्टीय प†चपदीय आधारित पाठयोजना तथा बालकेन्द्रित पाठयोजना) **101 – 124**

1. गद्य पाठ योजना
2. पद्य (श्लोक, नीतिश्लोक, सुभाषितानि) पाठयोजना
3. रचना पाठ योजना

इकाई–6 संस्कृत निबंध **125 – 129**

1. परोपकारः
2. सत्सड्.गतिः
3. विद्या
4. संस्कृतभाषायाः महत्वम्
5. अस्माकं विद्यालयः
6. अनुशासनम्
7. ग्राम्यजीवनम्
8. पुस्तकम्
9. महाकविः कालिदासः
10. दीपावलिः